सल्तनतकालीन स्थापत्य → प्रारंभ में अवशेषों पर निर्माण

→ इण्डो इस्लामिक < लावियत (बल्ली एवं शहतीर) / अरकुएट (गुम्बद एवं मेहराब)

→ चूना एवं अरबस्क

→ पत्थरों का प्रयोग

→ सलामी पद्धति (ढालू दीवारें) तुगलक वंश

→ अष्टकोणीय मकबरा - खाने जहाँ तेलंगानी

→ चारबाग शैली

Scanned with CamScanner

* दिल्ली सल्तनत की स्थापत्य कला *

- पृष्ठभूमि
- विशेषताएँ
  - (1) इण्डो - इस्लामी शैली
  - (2) अलंकरण
  - (3) भवन निर्माण सामग्री
- विभिन्न शासकों के समय विकास

क्या कारण है कि दिल्ली सुल्तान भारत में भवन निर्माण आदि कार्यों को कर रहे हैं?

⇒ यह इनकी राजनीतिक और धार्मिक आवश्यकता थी।

इण्डो - इस्लामी

→ त्राबियत (भारतीय शैली)
  → बल्ली एवं शहतीर का प्रयोग कर निर्माण कार्य पूरा किया जाता था।

→ अरकुएट
  → गुम्बद एवं मेहराब

अरकुएट शैली में एक पद्धति जो दिखाई देती है।

अरबस्क

↳ अरबी लिपि में लिखी गई कुरान की आयतें (कूफी)
+
फूल + पत्ती से अलंकरण

Scanned with CamScanner

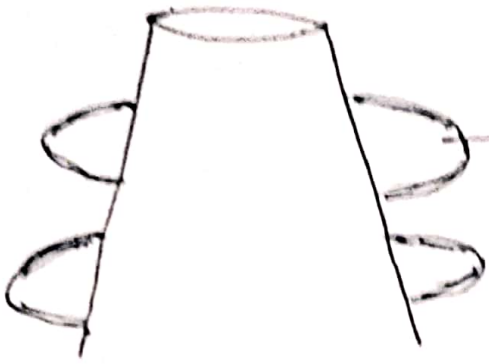

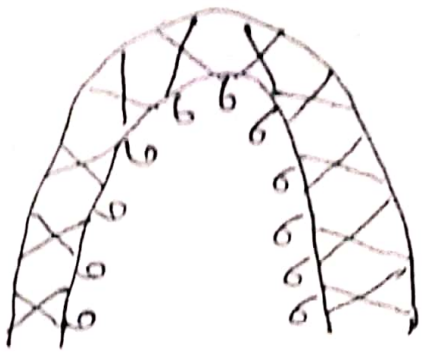

कुतुबमीनार

पृष्ठभूमि :-

इण्डो इस्लामिक

दिल्ली सल्तनत में वास्तुकला की नवीन संरचना का विकास हुआ। जिसे इण्डो - इस्लामी शैली कहा गया इसमें भारतीय पद्धति त्राबियत (बल्ली एवं शहतीर) का प्रयोग तथा इस्लामिक पद्धति अरकुएट (गुम्बद एवं मेहराब) के प्रयोग का सुन्दर समन्वय मिलता है। वस्तुतः शासकों की सहायता के लिए महलों एवं किलों का निर्माण हुआ तो धार्मिक आवश्यकताओं से प्रेरित होकर मस्जिद, मकबरों और मिनार का निर्माण किया गया। आरंभ में शासकों के पास समय की कमी थी अतः मौजूद भारतीय स्थापत्य को ही परिवर्तित कर मस्जिद का रूप दिया गया। किंतु जैसे-2 सल्तनत का सुदृढ़ीकरण और विस्तार हुआ स्वतंत्र रूप से भवन बनने लगे।

Scanned with CamScanner

विशेषताएं :-

दिल्ली सल्तनत काल में भवन निर्माण में पत्थरों का बहुतायत प्रयोग किया गया। भवन निर्माण में नींव को छोटे कंकड़, पत्थरों से भरा गया जिससे कि उपर का ढांचा मजबूत बन सके। भवन को चूने, गारे, जिप्सम के माध्यम से निर्मित किया गया।

⇒ दिल्ली सल्तनत में गुम्बद तथा मेहराब का अत्यधिक प्रचलन हुआ। वस्तुतः कुषाण शासकों द्वारा प्राचीन काल में इस संरचना का प्रयोग किया गया था जो उन्होंने रोम से प्राप्त किया था किंतु तुर्की शासकों ने भारत में गुम्बद एवं मेहराब निर्माण पद्धति को लोकप्रिय बनाया। गुम्बद और मेहराब ने विशालकाय भवन निर्माण को सहज बनाया। वस्तुतः गुम्बद, मेहराब ने छतों को सहारा देकर देने के लिए स्तम्भों की आवश्यकता को सीमित कर दिया।

⇒ इस्लामिक शैली के निर्मित भवनों में अलंकरण भी मिलता है। चूंकि इस्लाम में प्राणियों के चित्रण की मान्यता नहीं थी। अतः सजावट में फूल, पत्ती एवं ज्यामितीय प्रतीकों का उपयोग होता था तो साथ ही दीवारों पर 'कूफी' का अंकन किया जाता था वस्तुतः अरबी लिपि में लिखी कुरान की आयतें 'कूफी' कहलाती थी और जब इन्हे फूल, पत्तियों के अलंकरण के साथ अंकित किया जाता था तो पूरी संरचना 'अरबस्क' कहलाती थी। इस तरह अरबस्क इस्लामी स्थापत्य में अलंकरण की एक पद्धति थी।

Scanned with CamScanner

अलंकरण में फूल, पत्ती, घंटे का जो अंकन होता था वह धार्मनिरपेक्ष तत्वों को उद्घाटित करता है।

विभिन्न शासकों के समय हुआ विकास:-

इल्बारी काल (1206-90) :- इस काल में कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण करवाया। कुतुबमीनार एक शंकु के आकार का है जिसमें बाहर निकले हुए छज्जे मूल मीनार से रेडियेटाइट हनीकोमिंग तकनीक से जुड़े हुए हैं।

खिलजी काल:-

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में 'अलई दरवाजा' का निर्माण करवाया जिसमें घोड़े के नाल के आकार की मेहराब तथा उस पर कमल की डालरें मौजूद हैं। जिसकी भव्यता को देखकर मार्शल ने कहा कि "यह इस्लामिक स्थापत्य कला के खजाने का सबसे बड़ा हीरा है।" इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन ने हौज-ए-खास जमात खाना मस्जिद का निर्माण करवाया।

तुगलक वंश:-

तुगलक काल में भवन निर्माण में खुरदुरे पत्थर, ढालू दीवारें प्रयुक्त की गई। यह सलामी (ढालू दीवारें) तुगलक स्थापत्य की खास विशेषता है सलामी का प्रयोग भवनों को मजबूती देने के लिए किया गया। फिरोज के काल में सलामी का प्रयोग कम हुआ है। तुगलक ~~काल में~~ स्थापत्य में सस्ते और खुरदुरे पत्थरों का प्रयोग किया

Scanned with CamScanner

गया और सजावट पर बल दिया गया। इस काल के प्रमुख भवनो मे तुगलकाबाद का किला, काली मस्जिद, खिड़की मस्जिद आदि है।

सैय्यद एवं लोदी काल :-

इस काल मे मकबरो का निर्माण अत्यधिक हुआ है अतः इसे मकबरो का काल भी किय कहा गया है। मकबरे अष्टकोणीय होते थे जैसे - खानेजहाँ तैलंगानी का मकबरा। इसी तरह लोदियो ने स्थापत्य को बागो के मध्य ऊँचे चबूतरे पर बनवाया जिसे 'चार बाग' शैली कहा गया जो मुगलो के स्थापत्य की खास पहचान बन गई।

अष्टकोणीय मकबरा

चारबाग शैली